روشنی کی لکیر

रौशनी की लकीर



حافظ وقاری محمد انیس

हाफ़िज़ो क़ारी मुहम्मद अनीस

हम्द

अल्लाह करिश्मा अज़्मत का क्या ख़ूब दिखाया है तूने
इक मर्तबा लफ्ज़े कुन[1] कहकर दुनिया को बनाया है तूने

माँ बाप के सीनों में रखकर जज़्बात ए मुहब्बत की नैमत
रहमत का इलाही अपनी हमें अहसास दिलाया है तूने

वो मन्ज़रे कुदरत देखते ही हालात हुए ज़ालिम के ख़राब
मूसा को इलाही दरिया से जब पार लगाया है तूने

मख़्मल के भी बिस्तर पर कोई बैचैन रहा है सारी रात
राहत से किसी को ऐ मौला काँटों पे सुलाया है तूने

जब-जब ऐ 'अनीस' आया मुझ पर आफातो मसाइब का तूफान
तब-तब मुझे अपनी रहमत के दामन में छुपाया है तूने

① ख़ुदा ने जब दुनिया को पैदा करना चाहा
तो यह लफ्ज़ फरमाया (कुन)

حمد

اللہ کرشمہ عظمت کا کیا خوب دکھایا ہے تو نے
اک مرتبہ لفظِ کُن کہکر دنیا کو بنایا ہے تو نے

ماں باپ کے سینوں میں رکھ کر جزباتِ محبت کی نعمت
رحمت کا الٰہی اپنی ہمیں احساس دلایا ہے تو نے

وہ منظرِ قُدرت دیکھتے ہی حالات ہوے ظالم کے خراب
موسیٰ کو الٰہی دریا سے جب پار لگایا ہے تو نے

مخمل کے بھی بستر پر کوئی بے چین رہا ہے ساری رات
راحت سے کسی کو اے مولی کانٹوں پہ سلایا ہے تو نے

جب جب اے انیسؔ آیا مجھ پر آفات ومصائب کا طوفان
تب تب مجھے اپنی رحمت کے دامن میں چھپایا ہے تو نے

फज़ीलते दुरूदे पाक

खुदा भी भेजता है बारहा[1] दुरूदे पाक
रसूले पाक की ऐसी सना दुरूदे पाक

सुकूनो राहतों की इन्तिहा दुरूदे पाक
तमाम दर्दो अलम की दवा दुरूदे पाक

रखेगा शाद[2] हमें खुशनुमा उजालों से
हमारे दिल का मुनव्वर दिया दुरूदे पाक

ख़िरद[3] की झील में महके अक़ीदतों के फूल
सुरूरो कैफ की ऐसी फज़ा दुरूदे पाक

हुई कुबूल हमारी हर इक दुआ ऐ 'अनीस'
दुआ से पहले जो हमने पढ़ा दुरूदे पाक

[1] बार बार   [2] खुश   [3] अक़्ल

فضیلتِ درودِ پاک

خدا بھی بھیجتا ہے بارہا درودِ پاک
رسولِ پاک کی ایسی ثنا درودِ پاک

سکون و راحتوں کی انتہا درودِ پاک
تمام درد و الم کی دوا درودِ پاک

رکھے گا شاد ہمیں خوشنما اُجالوں سے
ہمارے دل کا مُنوّر دیا درودِ پاک

خِرد کی جھیل میں مہکے عقیدتوں کے پھول
سرور و کیف کی ایسی فضا درودِ پاک

ہوئی قبول ہماری ہراک دُعا اے انیسؔ
دُعا سے پہلے جو ہم نے پڑھا درودِ پاک

ग़ज़ल

दरख़्त - ए - जुल्म के जड़ से उखाड़ देंगे हम
ज़मीन - ए - जब्र ओ तशद्दुद उजाड़ देंगे हम

हमें अज़ीज़ है खुद से भी बढ़ के अमन ओ सुकून
किया फ़साद जो बरपा पछाड़ देंगे हम

उठाई हक़ के मुख़ालिफ किसी ने जो आवाज़
तो बाखुदा उसे फ़ौरन लताड़ देंगे हम

चुकाना आता है एहसान का बदल हम को
जो ज़र्रा दे हमें उस को पहाड़ देंगे हम

खुदा की क़सम ये इंसाफ़ ओ अदल का परचम
"अनीस" जुल्म के सीने में गाड़ देंगे हम

غزل

درخت ظلم کے جڑ سے اکھاڑ دیں گے ہم
زمینِ جبر و تشدد اجاڑ دیں گے ہم

ہمیں عزیز ہے خود سے بھی بڑھ کے امن و سکون
کیا فساد جو برپا پچھاڑ دیں گے ہم

اٹھائی حق کے مخالف کسی نے جو آواز
تو با خدا اسے فوراً لتاڑ دیں گے ہم

چکانا آتا ہے احسان کا بدل ہم کو
جو ذرہ دے ہمیں اس کو پہاڑ دیں گے ہم

خدا کی قسم یہ انصاف و عدل کا پرچم
"انیس" ظلم کے سینے میں گاڑ دیں گے ہم